International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 10-11-2019; Accepted: 12-12-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 5; Issue 1; Jan 2020; Page No. 48-50

अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिपः एक नवाचारी कदम

डॉ. दिब्या राय
असिस्टेंट प्रोफेसर, श्री मुरलीधर भागवतलाल महाविद्यालय, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
अध्यापक शिक्षा एक प्रक्रिया के रूप में कार्य करती है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उत्पाद के रूप में एक कुशल व प्रभावी शिक्षक को तैयार करने का प्रयास किया जाता है। जो समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके। इस दृष्टि से यह माना जा सकता है कि अध्यापक शिक्षा व शिक्षक एक सिक्के के दो पहलू है, जिसमें अध्यापक शिक्षा को प्रक्रिया के रूप में तथा शिक्षक को उसके उत्पाद के रूप में देखा जाता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में भावी शिक्षकों के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्ष उदीप्त हो सके, इसके लिए अध्यापक शिक्षा में आवश्यकतानुकूल गुणवत्ता एवं व्यापकता लाने के लिए विभिन्न आयोगों ने समय –समय पर अनेक सुझाव भी दिये जिसको आधार मानते हुए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में विभिन्न प्रकार के नवाचारी कदम भी उठाये गये। उन्हीं नवाचारी कार्यक्रमों के अर्न्तगत सर्वाधिक अभिनव रूप में माध्यमिक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत इण्टर्नि ाप को समाहित किया गया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षकों को कार्यक्षेत्र संबंधी वास्तविक अनुभव प्रदान करने के साथ–साथ सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष को एकीकृत करने का प्रयास भी किया गया है।

मुख्य भाब्द व्यावसायिक शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, इण्टर्नि ाप, प्रशिक्षु ,नवाचार, द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा

प्रस्तावना
शिक्षा की गुणात्मक उन्नति के लिए अध्यापकों की व्यावसायिक शिक्षा का ठोस कार्यक्रम अनिवार्य है।'' शिक्षा आयोग
अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम एक व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम है। जो अन्य अकादमिक शिक्षा कार्यक्रमों से बिल्कुल भिन्न है। इस कार्यक्रम के द्वारा विभिन्न स्तरों और विषय वर्ग के अध्यापकों को इस तरह से विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है कि वे शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण करने व वहन करने में सक्षम हो सकें तथा ज्ञान एवं मूल्यों का अगली पीढ़ी में हस्तान्तरण करने में समर्थ हो सकें।
गुड,सी.वी. द्वारा सम्पादित डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन में अध्यापक शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है ''अध्यापक शिक्षा को उन समस्त औपचारिक एवं अनौपचारिक क्रियाओं व अनुभवों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो व्यक्ति को शैक्षिक व्यवसाय के योग्य एवं जिम्मेदार सदस्य बनने में सहायता देते है या उसे अपनी जिम्मेदारी को अधिक प्रभावात्मक रूप में निभाने योग्य बनाते हैं''।

अध्यापक शिक्षा में नवाचार
अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में भावी शिक्षकों के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगत्यात्मक पक्ष उदीप्त हो सके, इसके लिए इस कार्यक्रम में आवश्यकतानुकूल संशोधन करने अथवा नवाचारी विकल्प सुझाने की आवश्यकता अनुभूत की गयी।
इन्हीं नवाचारी कार्यक्रमों के अन्तर्गत किये जाने वाले प्रयासों के परिणामस्वरूप अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए अभिक्रमित अधिगम सामग्री के रूप में अनुदेशनात्मक पैकेज एवं अनुदेशनात्मक नीति अथवा स्वअधिगम के रूप में अनुदेशनात्मक सामग्री का सृजन हुआ। इस प्रकार की अनुदेशन सामग्री शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, शैक्षिक मनोविज्ञान, शिक्षा अनुसंधान की पद्वतियाँ एवं उभरते भारतीय समाज में शिक्षा आदि पाठ्यक्रम के लिए उपलब्ध हो सकी। इस प्रकार की सामग्री का विकास CASE (Centre For Advanced Studies in Education) महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा तथा शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ में किया गया।
अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक वृद्वि हेतु किये गये अन्य प्रकार के प्रयासों में अध्यापक शिक्षा की विभिन्न पाठ्चर्याओं में प्रायोगिक अनुभवों को समृद्ध करने का प्रयास किया गया। इन नवाचारों को विद्यालयी शिक्षण विषयों यथा–विज्ञान शिक्षण, समाज विज्ञान शिक्षण में अपनाकर इन्हें प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया। शिक्षण अभ्यास एवं कौशल आधारित अभ्यास में नवाचारों द्वारा शिक्षण दक्षता में गुणात्मक बढ़ोत्तरी हेतु अनेक अध्ययन व अनुसंधान किये गयें। जिसके अन्तर्गत देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर द्वारा संचालित (ZLP) जीरो लेक्चर प्रोग्राम एवं लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (PTEP) आदि है।
इक्कीसवीं शताब्दी का पहला दशक अध्यापक शिक्षा में परिवर्तन की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण दशक रहा। अध्यापक शिक्षा को अधिक प्रभावकारी एवं सार्थक बनाने के लिए राष्ट्रीय एवं संस्थागत स्तर पर अनेकों प्रयास किये गये हैं। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) द्वारा समय–समय पर पाठ्यक्रम में समाज एवं विद्यालयीन मांग के अनुसार संशोधन की आवश्यकता अनुभव किये जाने पर बुद्धिजीवियों, शिक्षाशास्त्रियों एवं क्षेत्र में कार्यरत अध्यापक शिक्षकों के सहयोग से पाठ्यक्रम प्रारूप निर्मित एवं संशोधित किये गये। उच्च शिक्षा में सुधार व गुणवत्ता के लिए स्थापित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) ने 1990 एवं 2002 में भी अध्यापक शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या प्रारूप तैयार किया। NCTE द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या आकल्पन एवं संशोधन का प्रयास 1978, 1988, 1998, 1999, 2005 एवं 2009 में किया। विगत दशक में तैयार की गयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009 और न्यायमूर्ति जे.एस.वर्मा समिति की रिपोर्ट 2012 ने अध्यापक शिक्षा में आमूल–चूल बदलाव की पुरजोर सिफारिश की है ऐसी स्थिति में 'नये तरह के विचारों' के जन्म एवं उनका प्रसार विश्वविद्यालयों का दायित्व बनता है। दिल्ली विश्वविद्यालय

के बी.एल.एड. कार्यक्रम ने अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में नये प्रगतिशील प्रोगाम का उदाहरण प्रस्तुत किया। एन.सी.ई.आर.टी., एन.सी.टी.ई. और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय के द्वारा द्विवर्षीय अध्यापक शिक्षा (बी.एड.) की पाठ्यचर्या को भी प्रस्तुत किया गया। इन आधारों पर एन.सी.टी.ई. द्वारा सरकारी अधिसूचना लाकर वर्ष 2014 में बी.एड. पाठ्यचर्या को द्विवर्षीय घोषित कर दिया गया तथा इसके साथ ही अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में न केवल अवधि बढ़ी है बल्कि नये घटकों को सम्मिलित करते हुए अध्यापक शिक्षा को प्रभावी बनाने के दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी उठाया गया। द्विवर्षीय बी.एड़ पाठ्यचर्या के अन्तर्गत आवश्यक व्यावसायिक दक्षताओं (EPC) के विकास पर भी प्रमुख रूप से बल दिया गया है। साथ ही सर्वाधिक अभिनव रूप में माध्यमिक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत इण्टर्नशिप को सम्मिलित किया गया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षकों को कार्यक्षेत्र संबंधी वास्तविक अनुभव प्रदान करने के साथ–साथ सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष को एक साथ जोड़ने का प्रयास भी किया गया है। इस इण्टर्नशिप कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी–शिक्षकों में व्यावसायिक दक्षता एवं अध्यापकीय प्रवृत्ति विकसित करना, विद्यालयी कार्यस्थितियों के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना एवं उन्हें शिक्षण कौशलों से सम्पन्न बनाना है।

अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप

वर्ष 2015 से निर्धारित अध्यापक शिक्षा के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में इण्टर्नशिप को एक अभिन्न घटक के रूप में सम्मिलित किया गया। इण्टर्नशिप को द्विवर्षीय पाठ्यक्रम में एक निश्चित समयावधि के अनुसार रखा गया। पुनः एन.सी.टी.ई. द्वारा जनवरी 2016 में 'School Internship' का जो प्रारूप प्रस्तुत किया गया उसके अनुसार इण्टर्नशिप की समयावधि को प्रथम वर्ष के द्वितीय समसत्र में 2 सप्ताह का तथा द्वितीय वर्ष के तृतीय समसत्र में 18 सप्ताह का रखा गया है। इस प्रकार इण्टर्नशिप हेतु कुल 20 सप्ताह का समय निर्धारित किया गया है। विद्यार्थी–शिक्षकों को इण्टर्नशिप के लिए विभिन्न प्रकृति वाले विद्यालयों पर भेजा जाना नियत है, जो प्राथमिक या उच्च प्राथमिक स्तर तक के होगें। इण्टर्नशिप अभ्यास के दौरान प्रशिक्षु विद्यालय में होने वाली समस्त गतिविधियों यथा– समुदाय आधारित अनुभव, विद्यालयी परिस्थितियों का अवलोकन, विद्यालय में होने वाली नवाचारयुक्त गतिविधियों पर केश स्टडी करना, प्रश्नपत्र निर्माण करना, मूल्यांकन उपकरण बनाना एवं शिक्षण करना आदि में अपनी पूर्ण संलग्नता प्रदर्शित करेगें। ये सभी गतिविधियाँ विद्यार्थी–शिक्षक विद्यालयी मेंटर शिक्षकों एवं मेंटर अध्यापक शिक्षकों के निर्देशन में करेगें।

अध्यापक शिक्षा में इण्टर्नशिप की आवश्यकता क्यों ?

सर्वप्रथम इस कार्यक्रम को चिकित्सा के क्षेत्र में शामिल किया गया जिसके कारण इस व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम की प्रभावकता में वृद्धि हुई। इण्टर्नशिप कार्यक्रम की चिकित्सा के क्षेत्र में अनुभवित उपयोगिता एवं प्रभावशीलता के कारण ही इस प्रत्यय को अन्य व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों में सम्मिलित किया गया। अन्य व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्रों यथा– लेखा, नर्सिंग, वकालत, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी/तकनीकी शिक्षा, कम्प्यूटर अनुप्रयोगिकी शिक्षा, कानूनी शिक्षा, पत्रकारिता, प्रबंधन आदि में इस कार्यक्रम को शामिल किया गया है। अतः यह स्पष्ट है कि इण्टर्नशिप विद्यार्थियों के शैक्षणिक अधिगम एवं वास्तविक कार्यक्षेत्र में इसका अनुप्रयोग करने के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार से देखा जाये तो व्यावसायिक शिक्षा क्षेत्रों में अध्यापक शिक्षा भी व्यावसायिक शिक्षा का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है तो फिर इससे भी इण्टर्नशिप को पृथक नही किया जा सकता है। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में इण्टर्नशिप को सम्मिलित करने की आवश्यकता क्यों है इसको निम्नाकिंत बिन्दुओं के माध्यम से और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है–

इण्टर्नशिप कार्यक्रम शैक्षणिक अधिगम प्रक्रिया में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान की खाई को पाटता है। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं (Interns) को सेवा गतिविधियों में व्यस्त रखते हुए उन्हें अभ्यासात्मक या व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाता है, जिससे उनके समझने की शक्ति में प्रासंगिक रूप से बढ़ोत्तरी होती है।

इण्टर्नशिप अध्यापक शिक्षा को अपेक्षाकृत अधिक उन्नतशील एवं औचित्य पूर्ण बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में सम्मिलित किया गया है। इस पाठ्यक्रम में इण्टर्नशिप को सम्मिलित करने का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार के ज्ञान को समन्वित रूप प्रदान करते हुए, सैद्धान्तिक ज्ञान व अनुभव को 'वास्तविक कार्यक्षेत्र परिस्थिति' में उपयोग करने के अवसर प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षकों में व्यावसायिक कौशल की दक्षता विकसित होगी तथा उनके अन्दर कक्षा, विद्यालय, अधिगमकर्ताओं एवं समुदाय के प्रति प्रभावी सहभागिता जैसे गुणों को समुन्नत करने में सहायता प्राप्त होगी।

विद्यार्थी–शिक्षक इण्टर्नशिप के दौरान सहयोगी विद्यालयों के शिक्षकों व विद्यार्थियों से गहनतापूर्वक जुड़कर उनके सभी प्रकार के शैक्षणिक एवं व्यावहारिक गतिविधियों का निरीक्षण करेंगे एवं उनसे संबंधित अनुभवों को ग्रहण करने का कार्य करेंगे। प्रशिक्षु सहयोगी विद्यालय में संचालित होने वाली समस्त गतिविधियों में अपनी सक्रिय सहभागिता प्रदान करेंगे।

इण्टर्नशिप के लिए निर्धारित किये गये समसत्रीय वर्ष, समयावधि, शिक्षण अभ्यास पाठों की संख्या, अन्य गतिविधियों में सहभागिता, अंकभार एवं मूल्यांकन प्रक्रिया आदि सभी घटक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के संचालन को और अधिक महत्वपूर्ण व प्रभावी बनाते हैं।

इण्टर्नशिप का उद्देश्य प्रशिक्षुओं में एक शिक्षक के रूप में व्यावसायिक पहचान एवं दक्षता का विकास करना है। इन गुणों के विकास के लिए उनका अनुबंधन विद्यालय, कक्षा समुदाय तथा विद्यालयीन विद्यार्थियों के साथ स्थापित करना है जिससे प्रशिक्षुओं में व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं सृजनात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके तथा साथ ही साथ वे एक शिक्षक के रूप में अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करने में सक्षम हो सकें।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा का उपयोग 21वीं सदी के विद्यालयों में योग्य शिक्षकों की पूर्ति हेतु करना है। शिक्षकों में विभिन्न प्रकार के गुणों, कौशलों व क्षमताओं का विकास एक विशिष्ट प्रक्रिया के माध्यम से किया जाता है और इसी प्रक्रिया के अन्तर्गत इण्टर्नशिप को एक सृजनात्मक एवं सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अध्यापक शिक्षा में सम्मिलित किया गया है। जो एक नवाचारी कदम होने के साथ –साथ अध्यापक शिक्षा में एक नये अध्याय का आरम्भ भी है।

सन्दर्भ सूची

1. भारत सरकार (1964.66). षिक्षा आयोग का प्रतिवेदनः शिक्षा एवं राष्ट्रीय विकास, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली
2. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अल्का (2010). भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, इलाहाबाद रू शारदा पुस्तक भवन.
3. परवीन, सलेहा एवं निरजा, नाएद (2012). इण्टर्नशिप प्रोग्राम इन एजुकेशन, इफेक्टिवनेस, प्राबलम्स एण्ड प्रोस्पेक्ट्स.

इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ लर्निंग एण्ड डेपलपमेंट, 2 (1), 487–498.
4. भट्टाचार्य, जी. सी. (2013). अध्यापक शिक्षा . आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर
5. करीकुलम फ्रेमवक ऑफ टू इयर्स बी.एड. प्रोग्राम (2014). राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली
6. ऋषभ, कुमार मिश्र (2014), शिक्षक शिक्षा में बदलाव की पहल चुनौतियॉ एवं संभावनाएँ. परिप्रेक्ष्य, 21 (2), 39–51।
7. बूकालिया, रिचार्ड (2012). द पोटेन्सियल बेनीफिट्स एण्ड चैलेन्जेज ऑफ इण्टर्नशिप प्रोग्राम इन एन ओडिएल इन्स्टीट्यूशन : ए केश फॉर द जिम्बाम्बे ओपन यूनिर्वसिटी. इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ न्यू ट्रेन्ड्स इन एजुकेशन एण्ड देयर इम्प्लीकेशन्स, 3(1),118–133.